प्रकाशक की ओर से

महात्मा गांधी ने कहा था, ''किसी देश की महानता और नैतिक प्रगति को पशुओं के प्रति व्यवहार से आंका जा सकता है।'' इस उदात्त विचार में मनुष्यों और पशुओं के बीच सदा से चले आ रहे मज़बूत बंधन की झलक दिखती है। श्रम, आहार या वस्त्रों के लिए पशुओं पर निर्भरता के अतिरिक्त भी संसारभर के लोग हज़ारों सालों से पशुओं को पालतू जीवों के रुप में अपनाते रहे हैं। पशुओं से इस प्राचीन सम्बन्ध के कारण ही शायद बहुत से लोग अपने पालतू जीवों से गहरा लगाव रखते हैं। अमेरिकी और भारतीय लोग जानवरों को अपने घरों में अपनाते हैं और अपने पारिवारिक जीवन में उन्हें विशेष महत्व देते हैं। लोग जानवरों को अपनाते हैं, पालते हैं, उन्हें प्यार करते हैं, उनका नामकरण करते हैं और जैसा कि लॉरिडा कीज़ लौंग ने अपने आवरण लेख में बताया है, भटके, घायल या अनचाहे पशुओं की देखभाल के लिए संस्थाएं भी गठित करते हैं।

पालतू जीव रखने वाले ज़्यादातर लोग मानते हैं कि हम अपने पशुओं पर जो प्रेम लुटाते हैं, वह कई गुना बढ़कर हमें वापस मिलता है। (अपनी सम्पत्ति अपने पालतू पशुओं के नाम छोड़ जाने वाले लोगों की कहानियां हम अक्सर पढ़ते हैं। जूडी रिक्टर के लेख ''जब आपके वारिस हों झबरीले'' में ऐसी ही कुछ कथाएं प्रस्तुत हैं।)

बहुत से लोग मानते हैं कि पालतू जीवों की देखभाल हमारी आत्मा और देह, दोनों के लिए लाभकारी है। ''कैदियों से प्रशिक्षण पाते कुत्ते'' में एंड्रिया नील ऐसे अमेरिकी कार्यक्रमों के बारे में बता रही हैं जिनके अंतर्गत कैदियों को अंधे, बूढ़े, बीमार और अपंग लोगों की सहायता के लिए कुत्तों को प्रशिक्षित करने को प्रेरित किया जा रहा है। सच यह भी है कि सभी जीवों को ऐसे महत्वपूर्ण कार्यों के लिए प्रशिक्षित नहीं किया जा सकता, ''सेहत के लिए लाभकारी पालतू जीव'' में बताया गया है कि पालतू जीव आपके स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण और लाभकारी दीर्घकालिक प्रभाव डालते हैं।

स्पैन के हमारे सहकर्मियों को अपने पालतू जीवों से बहुत लगाव है। उनके आग्रह पर मैं इस आशा के साथ हमारी निक्की के बारे में बता रहा हूं कि आप भी अपने पालतू पशुओं के बारे में खास कथाएं हमें लिख भेजेंगे। कुछ साल पहले हमारे बच्चों ने जब अपने एक खास कुत्ते की मांग की तो मैं उनकी मांग को टाल नहीं पाया। यूं एक ठंडी सुबह मैं और मेरा बेटा एक जीव शरण केंद्र से एक मिलीजुली नस्ल का पिल्ला ले आए। निक्की ने हमारे दिलों में अपनी जगह बना ली। अब जब हमारे बच्चे बड़े होकर कहीं ओर रहने लगे हैं तो निक्की नई दिल्ली में हमारे बगीचे की मलिका है, वह मेरे पास सोती है और कुछ दुलार और खानेपीने की किसी चीज़ की आशा से भरी बड़े उत्साह से हमारे मेहमानों का स्वागत करती है।

आशा है कि आप पालतू जीवों के साथ-साथ आहार और संगीत जैसे उन सुखद विषयों पर प्रस्तुत लेखों को पसन्द करेंगे जिनका आनन्द भारतीय और अमेरिकी दोनों ही लेते हैं। ''टिक्का मसाला से आगे'' में सेबास्तियन जॉन अमेरिका में काम कर रहे शेफ़ द्वारा भारतीय व्यंजनों में लाए जा रहे बदलावों के बारे में बता रहे हैं तो रूमा दासगुप्ता हाल ही में लिखित और फोटोग्राफिक कृतियों के लिए दिया जाने वाला प्रतिष्ठित अमेरिकी पुलित्ज़र पुरस्कार पाने वाले पहले रॉक, संगीत कलाकार बॉब डिलॅन को लेकर पूर्वी भारत के सम्मोहन की पड़ताल कर रही हैं।

आपका मित्र,